P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-3* June- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

वैश्वीकरण एवं नवीन वाणिज्यिक प्रवृत्तियाँ

नैना त्रिवेदी
रिसर्च स्कॉलर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वैश्वीकरण के परिदृश्य में नवीन वाणिज्यिक प्रवृत्तियों का पता लगाना था। इसके लिए शोधार्थी द्वारा 20 विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया जिसमें से 10 विषय विशेषज्ञ उन्हें माना गया जो महाविद्यालय स्तर पर वाणिज्य विषय का शिक्षण करवाते हैं एवं 10 विषय विशेषज्ञ उन्हें माना गया जो शिक्षा संकाय से जुड़े हुए है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा डेल्फी तकनीक का प्रयोग किया गया, जिसमें उपकरण में कथनों के माध्यम से दो बार प्रशासित किया गया जिसके निष्कर्षानुसार कुल 26 वैश्विक प्रवृत्तियों का चयन किया गया।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, प्रवृत्ति।

प्रस्तावना

हमारा आधुनिक समय निरंतर परिवर्तनशील रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् से भारतीय समाज संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण एवं वर्तमान में वैश्वीकरण के दौर से गुजर रहा हैं यद्यपि वैश्वीकरण का संदेश भारतीय अर्थ में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित करना एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में पूरे विश्व को संदेश देना रहा है, जिसमें मानव को किसी एक राष्ट्र से नहीं अपितु 'विश्व नागरिकता' जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता रहा हैं, परन्तु वर्तमान में वैश्वीकरण का उद्देश्य व परिभाषा भिन्न दिखाई देते है।

वैश्वीकरण के सामान्य अर्थ से तात्पर्य प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु, सेवा, पूंजी एवं सेवाओं के अप्रतिबंधित आदान–प्रदान से हैं। वैश्वीकरण तभी सम्भव हो पाता है जब एक देश का दूसरे देश के साथ वस्तु, सेवा, पूँजी एवं बौद्धिक संपदा का अप्रतिबंधित आदान प्रदान करें एवं आदान–प्रदान के मार्ग में किसी देश द्वारा अवरोध उत्पन्न न हो और इसे कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था संचालित करें जिसमें सभी का विश्वास हो एवं जो सर्वानुमति से नीति निर्धारक सिद्धांतों का निरूपण करें।

विश्व में प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयास करता है इनमें से कुछ वस्तुएँ/आवश्यकताओं की पूर्ति वह स्वयं कर लेता हैं तथा कुछ के लिये उसे बाजार में मोल चुकाना होता है इस मोल को चुकाने हेतु व्यक्ति को धन की आवश्यकता होती है प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्ति हेतु कार्य करता है, इस हेतु वह विभिन्न कार्य करता है एवं इन कौशल को प्राप्त करने हेतु शिक्षा प्राप्त शैक्षिक करता है। वैश्वीकरण से तात्पर्य बौद्धिक सम्पदा, शिक्षा, ज्ञान, शिक्षा के साधन, संप्रेषण विधियाँ, सूचना, प्रौद्योगिकी व तकनीकी ज्ञान आदि का निवेश व व्यापार वैश्वीकरण के नियमों के अनुरूप किया जाता हैं, तब वह प्रक्रिया शैक्षिक वैश्वीकरण कहलाती हैं। इसका उद्देश्य ज्ञान का प्रसार बौद्धिक सम्पदा का विस्तार विकसित व विकासशील देशों की शिक्षा व्यवस्था में समन्वय स्थापित करना है। अतः शिक्षा के साधनों, विधियों, प्रविधियों, संचार साधनों व शिक्षण अधिगम की संरचना व विधियों, सूचना तकनीकी व संप्रेषण माध्यमों को एक वैश्विक आधार प्रदान करना है।

वर्तमान समय में समाज, देश अथवा राष्ट्र विकास की अवस्था से गुजर रहा हैं अतः वाणिज्य शिक्षा के संदर्भ में चली आ रही पुरानी अवधारणाओं में परिवर्तन आना स्वाभाविक लगता है। वैश्वीकरण एक विस्तृत अवधारणा हैं, जिसका प्रभाव वाणिज्य विषय पर पड़ना भी स्वाभाविक है।

वाणिज्य विषय का इतिहास देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया है तथा इसमें अधिक परिवर्तन वाणिज्यिक एवं आर्थिक क्षेत्र में देखने को मिलता है, जिसे वैश्विक वाणिज्यिक प्रवृत्तियों के नाम से जाना जा सकता है। वैश्विक प्रवृत्ति से तात्पर्य ऐसे परिवर्तन से है जिसे ग्राफ के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है तथा आम व्यक्ति के जीवन में यह परिवर्तन महसूस होता है।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-3* June- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

इन्हीं नवीन प्रवृत्तियों को वाणिज्य विषय में देखना आवश्यक है, क्योंकि यदि विषय से संबंधित प्रवृत्तियाँ नहीं ज्ञात की गई तो शोध में उसे देखना सम्भव नहीं होगा।

आज भारत ही नहीं विश्व के सभी विकसित देशों में शिक्षा की गुणवत्ता एक प्रमुख चिंता का विषय बन गई है। 21वीं सदी में तकनीकी क्रांति के साथ वही व्यक्ति तालमले बिठा सकता है, जिसकी शिक्षा में सभी प्रशिक्षण शामिल हो। देश तभी समृद्धि और विकास कर सकता है जब विद्यार्थी उच्च शिक्षा में सभी प्रशिक्षणों को प्राप्त कर सके। वाणिज्यिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी विश्व की व्यवसायिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करना तथा वाणिज्य संबंधी कार्य में विश्व में असंतुलन पर अंकुश लगाना आदि है। इन उद्देश्यों का निर्धारण उस समय की मांग व आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया होगा, इसलिये वर्तमान में वाणिज्य विषय से संबंधित प्रवृत्तियों को जानना आवश्यक हैं। अतः शोधार्थी द्वारा उपर्युक्त प्रवृत्तियों में परिवर्तन ज्ञात करने का निर्णय लिया गया।

उक्त शोध से संबंधित अध्ययन करने पर देखा गया डी.सी. कीर्तिराज (2015) द्वारा अकोला जिले में NEO-Buddhist समुदाय के निवासियों के सामाजिक व आर्थिक स्तर पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर अपना शोध किया गया, इस हेतु उनके द्वारा उस क्षेत्र के उक्त समुदाय के 264 निवासियों का चयन किया गया।

शोध के निष्कर्षानुसार 264 निवासियों में से 210 पुरूष एवं 54 महिलाओं की औसत आयु 39 थी शैक्षिक स्थितियों में देखा जाने पर 86.6 प्रतिशत व्यक्ति साक्षरता की श्रेणी में थे बाकि 14 प्रतिशत निवासी असाक्षर पाये गये। सबसे बड़ा समूह 52.3 प्रतिशत औसत आय वाले निवासियों का था, जिनकी आय 3000/– प्रतिमाह थी 76 प्रतिशत अस्थायी रोजगार से जुड़े है, 80 प्रतिशत व उससे अधिक लोग बैद्ध संस्कृति को मानने वाले है तथा साथ ही अम्बेड़कर जयंती को भी उत्सव के रूप में मनाते है। इस तरह से सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में निवासियों की स्थिति को देखा गया जिसमें वैश्वीकरण एकांकी परिवार, रोजगार वृद्धि, जीवन जीने के तरीकों में परिवर्तन आदि देखे गये।

Gebregergis, Cherkos Meaza (Sept. 2017) – "An Assessment of the Economic Impact of Globalization in Ethiopia: A Co-Integration Anal.

उक्त शीर्षक पर शोध किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य इथियोपिया पर आर्थिक वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना था, जिनके निष्कर्षों के आधार पर यह पता चला कि वैश्वीकरण आर्थिक प्रगति दोनों ही आपस में जुड़े हुए है और उन दोनों के मध्य का संबंध भी सकारात्मक आया जिससे निष्कर्षानुसार यह पता चला कि इथियोपिया अपेक्षाकृत ज्यादा आगे बढ़ सकता है। यदि प्रतिद्वंदी देशों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करता है, क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति एवं प्रतिबंध समेकित व खुले है।

शुक्ला, संजीव कुमार (2017) – द्वारा ''इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन'' (वाणिज्य और विज्ञान व्यवसाय के विशेष संदर्भ में) नामक शीर्षक पर शोध अध्ययन किया गया जिसमें उनका शोध उद्देश्य वर्ग विशेष के विद्यार्थी की अभिरूचि एवं दूसरे वर्ग विशेष के विद्यार्थियों की अभिरूचि में अंतर ज्ञात करना है, इसके लिये उन्होंने इंटरमीडिएट विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चुना तथा निष्कर्षानुसार वाणिज्य के क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग तथा पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया गया। दूसरी और विज्ञान क्षेत्र में सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों, सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अभिरूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

(1) वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विद्यमान वाणिज्यिक प्रवृत्तियों का पता लगाना।

शोध विधि/प्रविधि

सर्वेक्षण विधि

डेल्फी तकनीक द्वारा

न्यादर्श

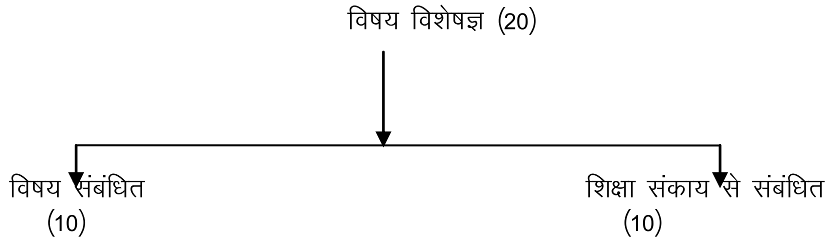

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में डेल्फी तकनीक का प्रयोग करने से पूर्व शोधार्थी द्वारा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं संबंधित साहित्य का अध्ययन कर वर्तमान में दिखाई देने वाली प्रवृत्तियों की सूची बनाई गई तथा उसे ही उपकरण के रूप में प्रयोग में लिया गया।

प्रस्तुत शोध में डेल्फी तकनीक का प्रयोग

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा डेल्फी तकनीक का प्रयोग वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यमान वैश्विक प्रवृत्तियों का पता लगाने के लिए किया गया है, ताकि इनके संदर्भ में उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सके। डेल्फी तकनीक के प्रयोग के प्रमुख चरण निम्नानुसार हैं–

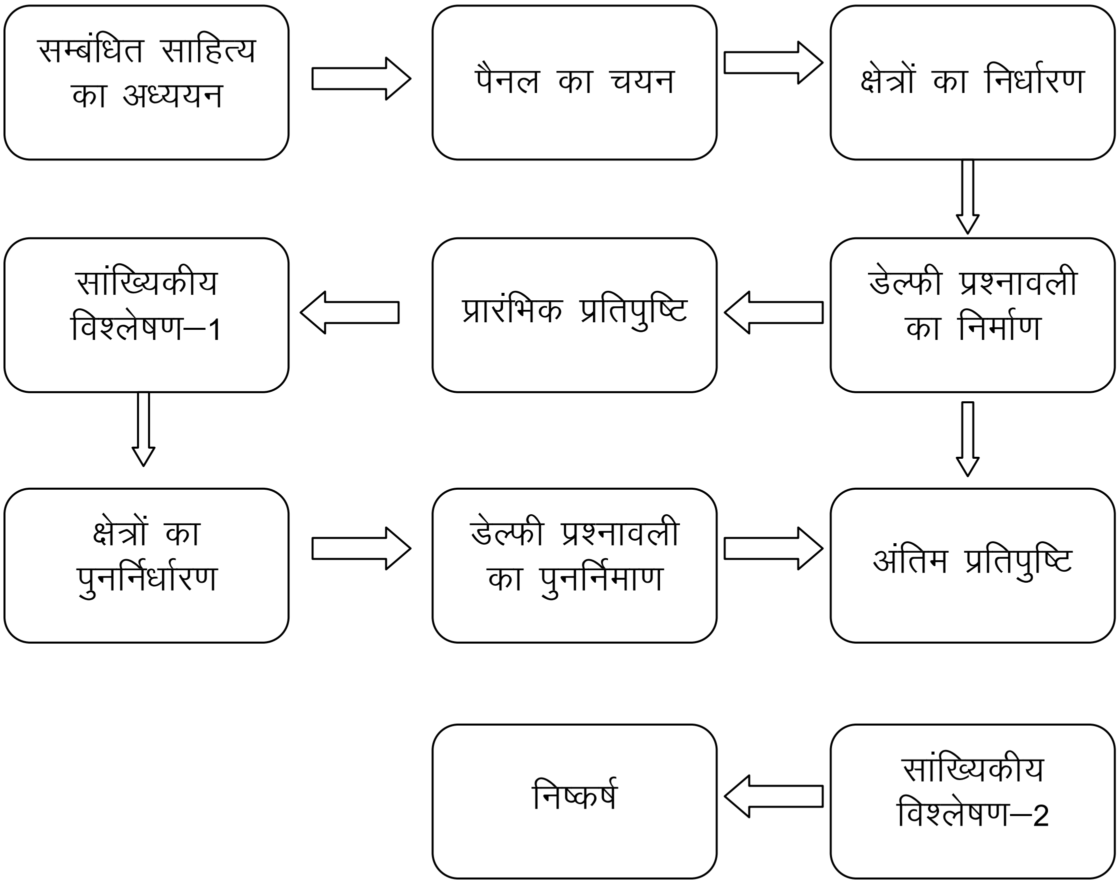

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

इस चरण के अन्तर्गत शोधार्थी ने व्यापार एवं वाणिज्य क्षेत्र से सम्बन्धित कई पत्र–पत्रिकाओं तथा शोध पत्रों का अध्ययन किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि इस क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर कौन–कौन सी नवीन प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं।

पैनल का चयन

सम्बन्धित साहित्य के व्यापक अध्ययन के उपरांत शोधार्थी ने अपने मार्गदर्शक से परामर्श करके 20 विषय विशेषज्ञों को डेल्फी पैनल में सम्मिलित किया। इस पैनल में 10 सदस्य शिक्षा संकाय एवं 10 सदस्य वाणिज्य संकाय के थे।

क्षेत्रों का निर्धारण

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन द्वारा शोधार्थी के पास विभिन्न वैश्विक प्रवृत्तियों से सम्बन्धित विषयवस्तु एकत्रित हो गई जिसका विषयवस्तु विश्लेषण कर कुछ क्षेत्रों को चिन्हित किया गया। प्रत्येक क्षेत्र में कुछ प्रवृत्तियाँ रखी गई यथा –

क्र.सं.	क्षेत्र	वैश्विक प्रवृत्तियाँ
1.	ई कॉमर्स (E-Commerce)	1. चीन की बढ़ती भूमिका 2. वेब डिजाइनिंग 3. क्रेडिट कार्ड प्रक्रिया 4. लेनदेन में प्लास्टिक मनी जैसे–डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड का बढ़ता प्रचलन 5. इंटरनेट बैंकिंग का विस्तार 6. मोबाइल/डिजीटल बटुए का बढ़ता प्रचलन
2.	प्रबंधन व नेतृत्व (Management & Leadership)	1. समालोचनात्मक 2. जन अभिविन्यासित दर्शन 3. व्यूह रचना प्रबंधन 4. जोखिम प्रबंधन 5. समाज केंद्रित निर्णय 6. विज्ञापनों में भावनाओं को प्रमुखता
3.	संपोषित उपागम	1. अवबोध

	(Sustainable Approach)	2. औद्योगिक निर्णयन में पर्यावरण सुरक्षा को प्रमुखता 3. सामाजिक दायित्वों का अभिज्ञान 4. विशिष्ट पाठ्यक्रमों का आयोजन
4.	मृदुल कौशल (Soft Skills)	1. उपभोक्ता की आवश्यकता एवं पसंद का ध्यान 2. कंसल्टिंग (सम्पर्क स्थापना) 3. संप्रेषण 4. प्रस्तुतीकरण
5.	वैश्विक मूल्य (Global Values)	1. वैश्विक लक्ष्यों को आधार बनाना 2. व्यवसाय का द्वायरा विश्व स्तर पर रखना 3. पारस्परिक सहयोग को प्राथमिकता देना 4. संस्कृति का संरक्षण करते हुए विकास करना

डेल्फी प्रश्नावली का निर्माण

शोधार्थी द्वारा निर्धारित क्षेत्रों में सम्मिलित प्रत्येक प्रवृत्ति को एक कथन के रूप में निरूपति करके एक डेल्फी प्रश्नावली बनाकर विषय विशेषज्ञों के पैनल को प्रेषित की गई।

प्रारंभिक प्रतिपुष्टि

विशेषज्ञों ने डेल्फी प्रश्नावली के प्रत्येक कथन पर अपनी राय व्यक्त की तथा दो महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये यथा –

(1) प्रथम प्रवृत्ति जो 'चीन की बढ़ती भूमिका' से सम्बन्धित है, को 'विकासशील देशों की बढ़ती भूमिका' करने के लिए कहा गया।

(2) 'नवीन जानकारियों' से सम्बन्धित एक नया क्षेत्र नया जोड़ने का भी सुझाव दिया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण–1

विषय विशेषज्ञों द्वारा सेल्फी प्रश्नावली के प्रत्येक कथन पर व्यक्ति किये गये अभिमत का सांख्यिकीय विश्लेषण किया। जिस कथन का मध्यमान प्रतिशत 50 से ज्यादा पाया गया उसे स्वीकृत किया गया। इस प्रकार सिर्फ कथन संख्या 1 का ही मध्यमान 50 से कम पाये जाने पर उसे अस्वीकृत किया गया। यथा–

प्रतिशत के आधार पर डेल्फी प्रश्नावली का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.सं.	कथन	मध्यमान प्रतिशत	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	वैश्वीकरण के नये वातावरण में वाणिज्य पाठ्यक्रम में 'चीन की बढ़ती भूमिका' को विषयवस्तु के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।	46.67%	अस्वीकृत
2.	व्यापारिक प्रक्रियाओं के बदलते स्वरूप को देखते हुए 'वेब डिजाइनिंग' को दत्त कार्य (Assignment) की तरह सम्मिलित किया जाना चाहिए।	70.00%	स्वीकृत
3.	अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय व्यापार की लेन देन की क्रियाओं में 'क्रेडिट कार्य प्रक्रिया' को सिखाया जाना चाहिए।	75.00%	स्वीकृत
4.	प्रतिस्पर्द्धा के वातावरण में प्रत्येक कुशल व्यवसायी बनाने हेतु वाणिज्य विद्यार्थियों को इंटरनेट बैंकिंग की जानकारी होना अनिवार्य है।	70.00%	स्वीकृत
5.	प्रत्येक व्यापारी वाणिज्यिक विद्यार्थियों को आय एवं भुगतान (प्लास्टिक मनी का बढ़ता प्रयोग) में आये नये बदलावों की जानकारी होनी चाहिए।	75.00%	स्वीकृत
6.	तकनीकी एवं कम्प्यूटर युग में आने वाले समय में 'मोबाईल/डीजीटल बटुए का बढ़ता प्रचलन' वाणिज्य विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।	78.33%	स्वीकृत
7.	उपर्युक्त सभी शिक्षण इकाईयों को ई कॉमर्स के भाग के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।	81.67%	स्वीकृत
8.	भौतिकतावादी युग में प्रबंधकीय कुशलता हेतु विद्यार्थियों में 'जन अभिविन्यासित दर्शन' विकसित करने की अनिवार्यता।	76.67%	स्वीकृत
9.	बदलती जीवन शैली के कारण 'व्यूहरचना प्रबंधन' प्रभावी बनाने की प्रबल आवश्यकता होती है।	85.00%	स्वीकृत
10.	वर्तमान में वाणिज्य के विद्यार्थियों को 'जोखिम प्रबंधन' सीखना अनिवार्य प्रतीत होता है।	90.00%	स्वीकृत
11.	व्यापार का मुख्य उद्देश्य केवल 'लाभ कमाना' ही नहीं समाज सुधार हेतु भी कार्य करना है, इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना	95.00%	स्वीकृत

	चाहिए।		
12.	बदलते समय में विज्ञापनों को आकर्षक बनाने हेतु अथवा उपभोक्ताओं को आकर्षित करने हेतु मानवीय भावनाओं का प्रयोग किया जा रहा है। वाणिज्य विद्यार्थियों को नये बदलाव की जानकारी उक्त संदर्भ में होनी चाहिए।	90.00%	स्वीकृत
13.	पर्यावरण संबंधी समस्याओं को दूर करने में एक वाणिज्य विद्यार्थी को उद्योगों के माध्यम से व्यापारी की भूमिका को बताया जाना चाहिए।	93.33%	स्वीकृत
14.	वर्तमान भौतिकवादी युग में वाणिज्य विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्वों का अभिज्ञाना करवाया जाना चाहिए।	95.00%	स्वीकृत
15.	'कौशल उपागम' को बढ़ावा देने हेतु वाणिज्य विषय से संबंधित विशिष्ट पाठ्यक्रमों को शामिल किया जाना चाहिए।	78.33%	स्वीकृत
16.	वैश्वीकरण के इस युग में वाणिज्य पाठ्यक्रम में मुदृल कौशल के अन्तर्गत निम्न प्रवृत्तियों को शामिल किया जाना चाहिए–		
	(i) उपभोक्ता की आवश्यकता का ध्यान रखना	81.67%	स्वीकृत
	(ii) उपभोक्ताओं की रूचि का ध्यान रखना	83.33%	स्वीकृत
	(iii) सम्पर्क स्थापना	88.33%	स्वीकृत
	(iv) सम्प्रेषण	93.33%	स्वीकृत
	(v) प्रस्तुतीकरण	83.33%	स्वीकृत
17.	वाणिज्य पाठ्यक्रम में उच्च माध्यमिक स्तर पर 'उद्यमिता' (Entrepreneurship) की नई संकल्पना को शामिल किया जाना चाहिए।	83.33%	स्वीकृत
18.	वर्तमान युग में विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक जानकारी के अन्तर्गत वैश्विक मूल्यों को भी शामिल किया जाना चाहिए–		
	(i) वैश्विक लक्ष्यों को आधार बनाना	93.33%	स्वीकृत
	(ii) व्यवसाय का दायरा विश्व स्तर पर रखना	85.00%	स्वीकृत
	(iii) पारस्परिक सहयोग को प्राथमिकता देना	95.00%	स्वीकृत
	(iv) संस्कृति का संरक्षण करते हुए विकास करना	93.33%	स्वीकृत

क्षेत्रों का पुनर्निर्धारण

विषय विशेषज्ञों द्वारा दी गई प्रारंभिक प्रतिपुष्टि के आधार पर क्षेत्रों को पुनर्निर्धारण किया गया जो कि निम्नानुसार है–

क्र.सं.	क्षेत्र	वैश्विक प्रवृत्तियाँ
1.	ई–कॉमर्स (E-Commerce)	1. विकासशील देशों की बढ़ती भूमिका 2. वेब डिजाइनिंग 3. क्रेडिट कार्ड प्रक्रिया 4. लेनदेन में प्लास्टिक मनी जैसे–डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड का बढ़ता प्रचलन 5. इंटरनेट बैंकिंग का विस्तार 6. मोबाईल/डिजीटल बटुए का बढ़ता प्रचलन
2.	प्रबंधन व नेतृत्व (Management & Leadership)	1. समालोचनात्मक 2. जन अभिविन्यासित दर्शन 3. व्यूहरचना प्रबंधन 4. जोखिम प्रबंधन 5. समाज केंद्रित निर्णय 6. विज्ञापनों में भावनाओं को प्रमुखता
3.	संपोषित उपागम (Sustainable Approach)	1. अवबोध 2. औद्योगिक निर्णयन में पर्यावरण सुरक्षा को प्रमुखता 3. सामाजिक दायित्वों का अभिज्ञान 4. विशिष्ट पाठ्यक्रमों का आयोजन

4.	मृदुल कौशल (Soft Skills)	1. उपभोक्ता की आवश्यकता एवं पसंद का ध्यान 2. कंसल्टिंग (संपर्क स्थापना) 3. संप्रेषण 4. प्रस्तुतीकरण
5.	वैश्विक मूल्य (Global Values)	1. वैश्विक लक्ष्यों को आधार बनाना 2. व्यवसाय का दायरा विश्व स्तर पर रखना 3. पारस्परिक सहयोग को प्राथमिकता देना 4. संस्कृति का संरक्षण करते हुए विकास करना
6.	नवीन जानकारियाँ (New Informations)	1. नोटबंदी 2. जीएसटी

डेल्फी प्रश्नावली का पुनर्निर्माण

क्षेत्रों एवं उनमें सम्मिलित प्रवृत्तियों के पुनर्निमाण के पश्चात् पुनः उन्हें कथन के रूप में निरूपित कर विषय विशेषज्ञों के पास अंतिम प्रतिपुष्टि हेतु प्रेषित किया गया।

अंतिम प्रतिपुष्टि

अंतिम प्रतिपुष्टि में विषय विशेषज्ञों ने डेल्फी प्रश्नावली के प्रत्येक कथन पर पुनः अपनी राय व्यक्त की तथा इस बार कोई नया सुझाव नहीं दिया।

सांख्यिकीय विश्लेषण–2

पुनर्निमित डेल्फी प्रश्नावली के प्रत्येक कथन पर विषय विशेषज्ञों द्वारा व्यक्त किये गये अभिमत का पुनः सांख्यिकीय विश्लेषण किया यथा–

प्रतिशत के आधार पर पुनर्निमित डेल्फी प्रश्नावली का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.सं.	कथन	मध्यमान प्रतिशत	स्वीकृत/ अस्वीकृत
1.	वैश्वीकरण के नये वातावरण में वाणिज्य पाठ्यक्रम में 'विकासशील देशों की बढ़ती भूमिका' को विषयवस्तु के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।	83.33%	स्वीकृत
2.	व्यापारिक प्रक्रियाओं के बदलते स्वरूप को देखते हुए 'वेब डिजाइनिंग' को दत्त कार्य (Assignment) की तरह सम्मिलित किया जाना चाहिए।	71.67%	स्वीकृत
3.	अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय व्यापार की लेन देन की क्रियाओं में 'क्रेडिट कार्य प्रक्रिया' को सिखाया जाना चाहिए।	78.33%	स्वीकृत
4.	प्रतिस्पर्द्धा के वातावरण में प्रत्येक कुशल व्यवसायी बनाने हेतु वाणिज्य विद्यार्थियों को इंटरनेट बैंकिंग की जानकारी होना अनिवार्य हैं।	71.67%	स्वीकृत
5.	प्रत्येक व्यापारी वाणिज्यिक विद्यार्थियों को आया एवं भुगतान प्राप्तियों (प्लास्टि मनी का बढ़ता प्रयोग) में आये नये बदलावों की जानकारी होनी चाहिए।	76.67%	स्वीकृत
6.	तकनीकी एवं कम्प्यूटर युग में आने वाले समय में 'मोबाईल/डीजीटल बटुए का बढ़ता प्रचलन' वाणिज्य विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।	80.00%	स्वीकृत
7.	उपर्युक्त सभी शिक्षण इकाईयों को ई कॉमर्स के भाग के रूप में जोडा जाना चाहिए।	83.33%	स्वीकृत
8.	भौतिकवादी युग में प्रबंधकीय कुशलता हेतु विद्यार्थियों में 'जन अभिविन्यासित दर्शन' विकसित करने की अनिवार्यता है।	83.33%	स्वीकृत
9.	बदलती जीवन शैली के कारण 'व्यूहरचना प्रबंधन' प्रभावी बनाने की प्रबल आवश्यकता होती है।	86.67%	स्वीकृत
10.	वर्तमान में वाणिज्य के विद्यार्थियों को 'जोखिम प्रबंधन' सीखाना अनिवार्य प्रतीत होता है।	99.33%	स्वीकृत
11.	व्यापार का मुख्य उद्देश्य केवल 'लाभ कमाना' ही नहीं समाज सुधार हेतु भी कार्य करना हैं, इसे पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।	96.67%	स्वीकृत
12.	बदलते समय विज्ञापनों को आकर्षक बनाने हेतु अथवा उपभोक्ताओं को आकर्षित करने हेतु मानवीय भावनाओं का प्रयोग किया जा रहा है। वाणिज्य विद्यार्थियों को नये बदलाव की जानकारी उक्त संदर्भ में होनी चाहिए।	93.33%	स्वीकृत
13.	पर्यावरण संबंधी समस्याओं को दूर करने में एक वाणिज्य विद्यार्थी को उद्योगों के माध्यम से व्यापारी की भूमिका को बताया जाना चाहिए।	95.00%	स्वीकृत
14.	वर्तमान भौतिकवादी युग में वाणिज्य विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्वों	96.67%	स्वीकृत

	का अभिज्ञान करवाया जाना चाहिए।		
15.	'कौशल उपागम' को बढ़ावा देने हेतु वाणिज्य विषय से संबंधित विशिष्ट पाठ्यक्रमों को शामिल कयिा जाना चाहिए।	86.67%	स्वीकृत
16.	वैश्वीकरण के इस युग में वाणिज्य पाठ्यक्रम में मृदुल कौशल के अन्तर्गत निम्न प्रवृत्तियों को शामिल किया जाना चाहिए–		
	(i) उपभोक्ताओं की आवश्यकता का ध्यान रखना	90.00%	स्वीकृत
	(ii) उपभोक्ताओं की रूचि का ध्यान रखना	88.33%	स्वीकृत
	(iii) सम्पर्क स्थापना	93.33%	स्वीकृत
	(iv) सम्प्रेषण	95.00%	स्वीकृत
	(v) प्रस्तुतीकरण	88.33%	स्वीकृत
17.	वाणिज्य पाठ्यक्रम में उच्च माध्यमिक स्तर पर 'उद्यमिता' (Entrepreneurship) की नई संकल्पना को शामिल किया जाना चाहिए।	90.00%	स्वीकृत
18.	वर्तमान युग में विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक जानकारी के अन्तर्गत वैश्विक मूल्यों को भी शामिल किया जाना चाहिए –		
	(i) वैश्विक लक्ष्यों को आधार बनाना	93.33%	स्वीकृत
	(ii) व्यवसाय का दायरा विश्व स्तर पर रखना	88.33%	स्वीकृत
	(iii) पारस्परिक सहयोग को प्राथमिकता देना	96.67%	स्वीकृत
	(iv) संस्कृति का संरक्षण करते हुए विकास करना	98.33%	स्वीकृत
19.	पाठ्यक्रम में नवीन जानकारियों जैसे नोटबंदी, जीएसटी इत्यादि को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।	88.33%	

निष्कर्ष

पुनर्निमित डेल्फी प्रश्नावली के सभी कथनों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा दी गई राय का मध्यमान प्रतिशत 50 से अधिक पाया गया। अतः सभी कथनों को स्वीकृत किया गया। इस प्रकार पुनर्निधारित क्षेत्रों में सम्मिलित सभी 26 वैश्विक प्रवृत्तियों का अंतिम रूप से चयन कर लिया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भटनागर, आर.पी.; भटनागर, ए.बी. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : लॉयल बुक डिपो।

गुप्ता, संदीप (2003). सांख्यिकीय प्रविधियाँ. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

जैन, बी.एम. (1987). शोध–प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक. नई दिल्ली : रिसर्च पब्लिकेशन्स।

पाण्डेय, के.पी. (1991). शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा. मेरठ : अमिताभ प्रकाशन।

शर्मा, आर.ए. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।

सुखिया, एस.पी.; मल्होत्रा, पी.वी. (1970). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

जैन, के.सी.एस. (2000), वाणिज्य शिक्षण, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली।